अभ्यास प्रश्न पत्र -1
अंक योजना (भूगोल)
कक्षा -12
सत्र 2020-21 अंक -70

प्र. स.		अंक
1-15.	SECTION –A 1. (c) 2. (d) 3. (d) 4. (b) 5. (b) 6. (a) 7. (d) 8. (a) 9. (b) 10. (c) 11. (b) 12. (c) 13. (a) 14. (a) 15. (c)	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
16. 17.	SECTION-B 1. (b) 2. (a) 3. (d) 4. (d) 1. (b) 2. (a) 3. (c) 4. (c)	3 1+1+1 3 1+1+1
18.	SECTION-C 1) मानव प्रकृति के नियमों को बेहतर ढंग से समझने के बाद ही प्रोद्योगिकी का विकास कर पाया। 2) घर्षण और ऊष्मा की संकल्पनाओं ने अग्नि की खोज में सहायता की। 3) डी एन ए और आनुवंशिकी की समझ ने हमें अनेक बीमारियों पर विजय पाने योग्य बनाया। 4) अधिक तीव्र गति से चलने वाले यान विकसित करने के लिए वायु गति के नियमों का प्रयोग किया जाता है। (any three relevant point) अथवा	3

https://www.evidyarthi.in

	1) प्राकृतिक नियमों का अनुपालन करके हम प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। 2) संभावनाओं को उन्ही सीमाओं के अंदर उत्पन्न किया जा सकता है, जहाँ पर्यावरण की हानि न होती हो। 3) अंधाधुंध रफ़्तार दुर्घटनाओं से मुक्त नहीं होती है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा चली गयी मुक्त चाल के परिणामस्वरूप हरित गृह प्रभाव, ओज़ोन परत अवक्षय, भूमंडलीय तापन, पीछे हटती हिमनदियां , निम्नीकृत भूमियां हैं। 4) नव-निश्चयवाद संकल्पनात्मक ढंग से एक संतुलन बनाने का प्रयास करता है। (to be explain any three relevant points)	
19.	1) पश्चिमी देशों में ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है, जबकि नगरीय क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। 2) नेपाल, पाकिस्तान, और भारत जैसे देशों में स्थिति इसके विपरीत है। 3) नगरीय क्षेत्रों में रोज़गार के अवसरों की अधिक संभावनाओं के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं के आगमन के परिणामस्वरूप यूरोप, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के नगरीय क्षेत्रों में महिलाओं की अधिकता है। 4) कृषि भी इन विकसित देशों में अत्यधिक मशीनीकृत है और ये लगभग पुरुष प्रधान व्यवसाय है। 5) इसके विपरीत एशिया के नगरीय क्षेत्रों में पुरुष प्रधान प्रवास के कारण लिंग अनुपात भी पुरुषों के अनुकूल है। 6) भारत जैसे देशों में , ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों में महिलाओं की सहभागिता अधिक है। 7) नगरों में आवास में कमी , रहन सहन की उच्च लागत , रोज़गार के अवसरों में कमी तथा सुरक्षात्मक कारणों से महिलाऐं शहरों की ओर बहुत कम प्रवास करती हैं।	3
20.	a. एक स्थान जो साधारणतया स्थायी रूप से बसा हुआ हो उसे मानव बस्ती कहते हैं। बस्तियां स्थायी अथवा अस्थायी हो सकती हैं। b. वृत्ताकार प्रतिरूप। c. इस प्रकार के गाँव झीलों व तालाबों आदि क्षेत्रों के चारों ओर बस्ती बीएस जाने से विकसित होते हैं। कई बार योजना के तहत भी ऐसे गाँव बसाये जाते जिनका मध्य भाग पशुओं को रखने तथा उनकी सुरक्षा हेतु खुला रखा जाता है।	3
21.	भारत के कृषि विकास में सिचाई के साधनों की भूमिका- 1) पारम्परिक रूप से भारत एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। इसीलिए पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि उत्पादन को बढाने के लिए सिंचाई के विकास को एक अति उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी है। 2) धरातलीय (89%) और भौम जल (92%) का सबसे अधिक उपयोग कृषि में होता है। 3) सिंचाई की व्यवस्था बहुफसलीकरण को संभव बनाती है।	**3**

evidyarthi

	4) ऐसा पाया गया है कि सिंचित भूमि की कृषि उत्पादकता असिंचित भूमि की अपेक्षा ज्यादा होती है। 5) फसलों की अधिक उपज देने वाली किस्मों के लिए आर्द्रता आपूर्ति नियमित रूप से आवश्यक है जो केवल विकसित सिंचाई तंत्र से ही संभव है। जैसे चावल, गन्ना, जूट इत्यादि। 6) इसी कारण से देश में कृषि विकास की हरित क्रांति की रणनीति पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अधिक सफल हुई है। अथवा 1) **जल का पुनः चक्र और पुनः उपयोग**- - उद्योगों में शीतलन और अग्निशमन के लिए कम गुणवत्ता अथवा शोधित अपशिष्ट जल का उपयोग। - नगरीय क्षेत्रों में स्नान, बर्तन धोने और वाहनों को धोने के लिए प्रयुक्त जल का बागवानी के लिए प्रयोग द्वारा बहुमूल्य जल संसाधनों का सरंक्षण किया जा सकता है। 2) **जल संभर प्रबंधन** – - धरातलीय और भौम जल संसाधनों का दक्ष प्रबंधन। - अन्तः स्रवण, तालाब, पुनर्भरण, कुओं आदि के द्वारा भौम जल का संचयन और पुनर्भरण। - केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा देश में बहुत से जल संभर विकास और प्रबंधन कार्यक्रम चलाये हैं। इनमें से कुछ गैर सरकारी संगठनों द्वारा भी चलाये जा रहे हैं जैसे हरियाली, नीरू-मीरू (जल और आप) और अरवारी पानी संसद इत्यादि। 3) **वर्षा जल संग्रहण** – - ये विभिन्न उपयोगों के लिए वर्षा के जल को रोकने और एकत्र करने की विधि है। - इसके द्वारा पानी की प्रत्येक बूँद संरक्षित करने के लिए वर्ष जल को नलकूपों, गड्ढों और कुओं में एकत्र किया जाता है। - वर्षा जल संग्रहण पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है। तथा भूमिगत जलस्तर को नीचा होने से रोकता है। - फ्लोराइड तथा नाइट्रेट्स जैसे संदूषकों को कम करके अवमिश्रण भूमिगत जल की गुणवत्ता को बढ़ाता है।	
22.	1) भू-विन्यास और जल की उपलब्धता के साथ जलवायु प्रमुख रूप से वितरण के प्रतिरूपों का निर्धारण करती है। 2) उत्तर भारत के मैदानों, डेल्टाओं और तटीय मैदानों में जनसंख्या का अनुपात दक्षिणी और मध्य भारत के राज्यों के आंतरिक जिलों, हिमालय, उत्तर-पूर्वी और कुछ पश्चिमी राज्यों की अपेक्षा उच्चतर है। 3)सामाजिक और आर्थिक कारणों में स्थायी कृषि का उद्भव और कृषि विकास , 4) मानव बस्ती के प्रतिरूप , परिवहन जाल तंत्र का विकास , ओद्योगीकरण और नगरीकरण हैं।	3

https://www.evidyarthi.in

	4) दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलुरु,पुणे, अहमदाबाद, चेन्नई और जयपुर में ओद्योगिक विकास तथा नगरीकरण के कारण उपलब्ध रोज़गार के अवसर यहाँ जनसँख्या के उच्च सांद्रण को बढ़ाते हैं। 5) भारत के नदीय मैदानों और तटीय क्षेत्रों में सदैव जनसंख्या का विशाल सांद्रण पाया जाता है।	
23.	प्रवास के पर्यावरणीय प्रभाव – 1) नगरीय बस्तियों की अनियोजित वृद्धि। 2) गन्दी बस्तियों और क्षुद्र कॉलोनियों का निर्माण। 3) भौम जलस्तर का अवक्षय। 4) वायु प्रदुषण 5) वाहित मल और ठोस कचरे के निपटान से सम्बंधित गंभीर समस्या (or any other relevant point)	5
24.	**गुन्छित बस्तियां-** 1) घरों का एक सहंत अथवा संकुलित रूप से निर्मित क्षेत्र 2) रहन-सहन का क्षेत्र स्पष्ट तथा चारों और फैले खेतों , खलिहानों और चरागाहों से पृथक होता है। 3) मध्यवर्ती गलियां ज्यामितीय आकृतियाँ प्रस्तुत करती हैं। जैसे अरीय, रैखिक आयताकार इत्यादि। 4) सुरक्षा अथवा प्रतिरक्षा कारणों से भी इनका निर्माण होता है। 5) प्रायः उपजाऊ जलोढ़ मैदानों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में पाई जाती हैं। **अर्ध-गुन्छित बस्तियां**- 1) ये बस्तियां परिक्षिप्त बस्ती के किसी सीमित क्षेत्र में गुच्छित होने की प्रवृत्ति का परिणाम हैं। 2) सहंत गाँव के विखंडन के परिणामस्वरूप भी उत्पन्न होती हैं। इस स्थिति में समाज का कोई वर्ग स्वेच्छा से अथवा बलपूर्वक मुख्य गुच्छ गाँव से थोड़ी दूरी पर बीएस जाते है। 3) आमतौर पर जमींदार और गाँव के अन्य मुख्य लोग गाँव के केन्द्रीय भाग में रहते हैं 4) निचले तबके और निम्न कार्यों में सलंग्न लोग बाहरी भाग में रहते हैं। 5) गुजरात के मैदान और राजस्थान के कुछ भागों में व्यापक रूप से पाई जाती हैं।	5
25.	**मिश्रित कृषि-** 1) विश्व के अत्यधिक विकसित भागों से सम्बंधित है –जैसे उत्तरी-पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका का पूर्वी भाग इत्यादि। 2) फसल उत्पादन एवं पशुपालन, दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण। 3) खाद्य फसलों के साथ चारे की फसलें भी उगाई जाती हैं। 4) कृषि मृदा की उर्वरता बनाये रखने के लिए शस्यावर्तन तथा अन्तःफसलीकरण पर ज़ोर।	5

https://www.evidyarthi.in

	5) विकसित कृषि यंत्र , इमारतों , रासायनिक एवं वनस्पति खादों के गहन उपयोग पर अधिक पूँजी व्यय। **डेरी कृषि** - 1) दुधारू पशुओं के पालन-पोषण का सर्वाधिक उन्नत एवं दक्ष प्रकार। 2) अधिक पूंजी की आवश्यकता 3) पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन एवं पशु चिकित्सा पर भी अधिक ध्यान। 4) नगरीय एवं औद्योगिक केन्द्रों के समीप की जाती है। 5) विकसित यातायात के साधनों,प्रशीतकों एवं पास्तेरिकरण की सुविधा की आवश्यकता (or any other relevant point) अथवा **चलवासी पशुचारण**- 1) प्राचीन जीवन निर्वाह व्यवसाय। भोजन, वस्त्र, शरण, औजार एवं यातायात के लिए पशुओं पर निर्भरता। 2) पालतू पशुओं के साथ पानी एवं चारागाह की उपलब्धता एवं गुणवत्ता के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान को पशुचारकों का स्थानान्तरण। 3) भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कई प्रकार के पशुओं का पालन –जैसे उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में गाय-बैल प्रमुख पशु हैं जबकि सहारा एवं एशिया के मरुस्थलों में भेड़ , बकरी एवं ऊँट इत्यादि का पालन। 4) पशुचारकों के अपने-अपने निश्चित क्षेत्र होते है। 5) राजनीतिक सीमाओं के अधिरोपण एवं कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाने के कारण चलवासी पशुचारकों की संख्या घटती जा रही है। 6) उत्तरी अफ्रीका के अटलांटिक तट , अरब प्रायद्वीप, मंगोलिया , मध्य चीन , टुन्ड्रा , मेडागास्कर द्वीप इत्यादि चलवासी पशुचारण के प्रमुख क्षेत्र। **वाणिज्य पशु धन पालन**- 1) अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है। तथा पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित 2) फार्म स्थायी तथा विशाल क्षेत्र पर फैले होते हैं। तथा छोटी इकाइयों में बंटे होते हैं। 3) विशिष्ट गतिविधि है जिसमें केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं। 4) उत्पादों को वैज्ञानिक ढंग से संसाधित एवं डिब्बा बंद कर विश्व के बाजारों में निर्यात कर दिया जाता है। 5) न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, उरुग्वे , संयुक्त राज्य अमेरिका प्रमुख क्षेत्र हैं। (or any other relevant point)	
26 .	मानव विकास- विकास का सम्बन्ध लोगों के विकल्पों में बढ़ोत्तरी से है ताकि वे आत्म सम्मान के साथ दीर्घ और स्वस्थ जीवन जी सकें। **समता** – समता का आशय प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों के लिये समान पहुंच की व्यवस्था करना है। लोगों को उपलब्ध अवसर लिंग, प्रजाति, आय और भारत के सन्दर्भ जाति के भेदभाव के विचार के बिना समान होने चाहिए। **सतत पोषणीयता**-अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता सतत पोषणीय मानव विकास के लिए आवश्यक है। प्रत्येक पीढ़ी को समान अवसर मिलें। समस्त पर्यावरणीय वित्तीय एवं मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रख कर	1+4 =5

https://www.evidyarthi.in

	करना चाहिए। संसाधनों में किसी भी तरह का दुरूपयोग भावी पीढ़ियों के लिए अवसरों को कम करेगा। (to be explain with more examples)	
27.	जन संख्या घनत्व- सामान्यतः प्रति वर्ग किलोमीटर में रहने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। जनसंख्या का घनत्व = $\frac{\text{जनसख्या}}{\text{क्षेत्रफल}}$ भौगोलिक कारक – - जल की उपलब्धता - भू-आकृति - जलवायु - मृदाएँ (to be explain)	1 +4 =5
28.	मानचित्र सम्बंधित प्रश्न 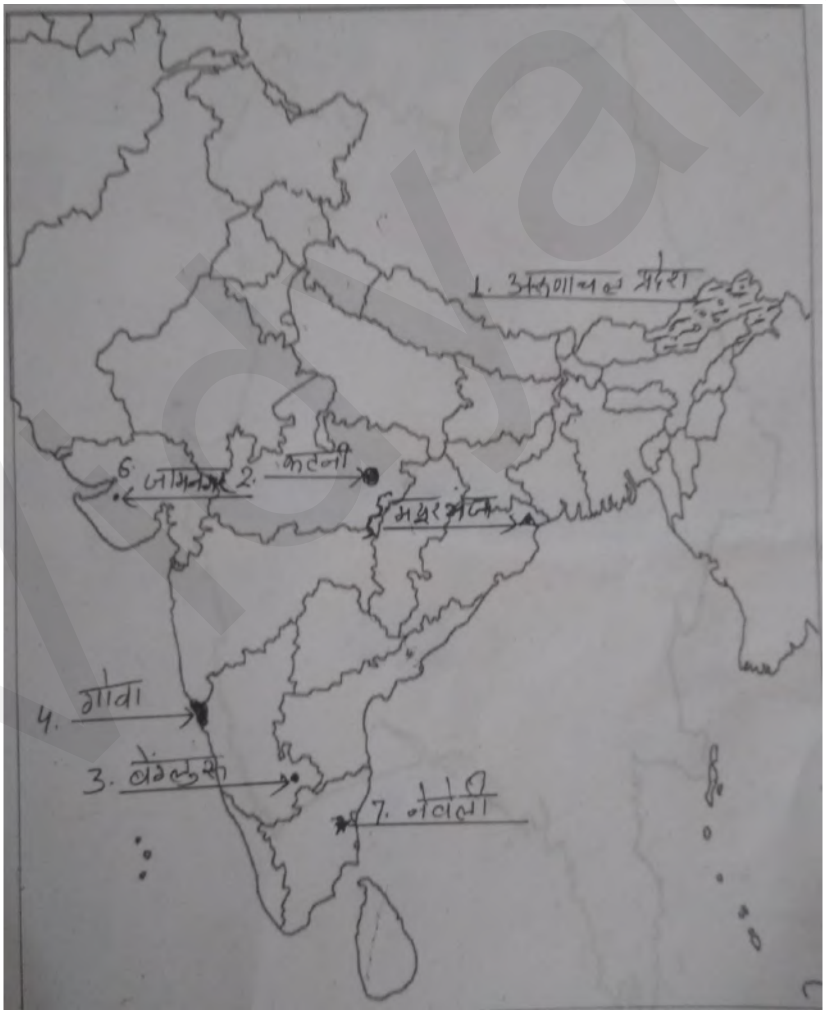	1 x 5

https://www.evidyarthi.in

29.	A . उष्ण अफ्रीका B. ब्राज़ील C .स्टेप्पी D. न्यूज़ीलैंड E. कनाडा	1 x 5

evidyarthi